ISSN: 2582-7162

शोध-पत्र

''हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नवाचारी शिक्षण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।''

डॉ. सुशीला शील[1], रणधीर यादव[2]

[1]सहायक आचार्य, श्री अग्रसेन स्नातकोत्तर शिक्षा महाविद्यालय, सीटीई केशव विद्यापीठ, जामडोली (जयपुर)
[2]शिक्षा विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

Corresponding Author:
रणधीर यादव
शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर
Email : prof.randhir1975@gmail.com

Received 2022 June 16, Accepted 2022 June 22, Published - 2022 July 07

सारांशः– प्रस्तुत अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर नवाचारी शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध अध्ययन में आश्रित चर शैक्षिक उपलब्धि के मापन हेतु कक्षा 7वीं के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांकों को आधार बनाया गया है। उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत शोध अध्ययन में पाया गया की राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में भी ऋणात्मक सहसंबंध है। निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सकारात्मक (धनात्मक) सहसंबंध है। राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं तथा निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध में धनात्मक व महत्वपूर्ण सार्थक अन्तर है।

तकनीकी शब्द :– शैक्षिक उपलब्धि, नवाचारी शिक्षण

<u>पृष्ठभूमि :–</u> शैक्षिक उपलब्धि से हमारा आशय है, किसी विद्यार्थी की किसी विशेष विषय या पाठ्यक्रम में उस विद्यार्थी के ज्ञान, समझ व कुशलता का माप। बालक द्वारा अपनी आयुवर्ग के लिए निर्धारित शैक्षिक पाठ्यक्रम की गतिविधियों को सीख लेना ही उसकी शैक्षिक उपलब्धि का मानदण्ड है। वे बालक जो अपनी आयुवर्ग के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम की गतिविधियों को जितना अधिक सीखेंगे उनकी शैक्षिक उपलब्धि उतनी ही अधिक होगी। शैक्षिक उपलब्धि में विशेष रूप से ज्ञानात्मक पक्ष का ही समावेश रहता है। उदाहरण के लिए यदि कोई बालक गणित विशष में कमजोर है तो उसकी गणित विशष में शैक्षिक उपलब्धि कम होगी वहीं दूसरी ओर जो बालक हिन्दी विशष की अच्छी समझ रखता है, तो उसकी हिन्दी विशष में शैक्षिक उपलब्धि उच्च होगी। शिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रम की समाप्ति पर जो परीक्षा ली जाती है। वह परीक्षा बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का ही मापन करती है। जो बालक परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करता है, उसकी शैक्षिक उपलब्धि अधिक होगी तथा इसके विपरीत जो बालक परीक्षा में कम अंक प्राप्त करता है, उसकी शैक्षिक उपलब्धि कम होगी। किसी परीक्षा में प्राप्त होने वाले प्राप्तांक बालक की शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण करते हैं। बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर विद्यालय वातावरण, कक्षा वातावरण, पारिवारिक वातावरण तथा शिक्षक का व्यवहार आदि ऐसे अनेक कारक है जो अपना महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

शोधकर्ता द्वारा शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित निम्नलिखित शोध अध्ययनों का अवलोकन किया गया जो इस प्रकार हैं :–

1. <u>दीक्षित मिथिलेश कुमारी (1985) :–</u>
   कक्षा 9वीं व 11वीं के किशोर विद्यार्थियों की बुद्धिलब्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' प्रस्तुत शोध अध्ययन के संदर्भ में शोधार्थी ने निष्कर्ष निकाला कि कक्षा 11वीं के विद्यार्थियों के उच्च तथा निम्न बुद्धि स्तर व शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. <u>अंशु (1986) :–</u>
   पारिवारिक वातावरण, उपलब्धि मूल्यों व समायोजन का अध्ययन।'' प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के निष्कर्ष को रेखांकित करते हुए अनुसंधानकर्ता ने बताया कि पारिवारिक वातावरण बालकों के उपलब्धि मूल्यों व समायोजन क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।
3. <u>चेरियान वी.आई. (1990) :–</u>
   विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर दण्ड के प्रभाव का अध्ययन। इस शोध अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व दण्ड के मध्य सार्थक संबंध है।

4. अरोड़ा संतोष (1991) :–

विद्यार्थियों के गृह वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन। शोधार्थी द्वारा निष्कर्ष के रूप में यह ज्ञात किया गया कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व गृह वातावरण के मध्य सार्थक संबंध था।

5. चन्द्र एस.के. (1992) :–

किशोर युवक युवतियों के व्यक्तिगत मूल्यों का शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक आर्थिक स्थिति के संबंध का अध्ययन। इस शोधकार्य के संबंध में निष्कर्षतः यह पाया गया कि बालक एवं बालिकाओं की मानसिक एवं शारीरिक शक्ति में सार्थक एवं पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है।

6. यादव जय श्री (1996) :–

बालक अभिभावक संबंधों का छात्र के समायोजन व उपलब्धि स्तर पर प्रभाव का अध्ययन करना। प्रस्तुत अनुसंधान के आधार पर यह निश्कर्श निकाला गया कि लिंग भेद का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है।

7. रमा एस.एन. (2000) :–

समायोजन की समस्या का शैक्षणिक उपलब्धियों से संबंध का अध्ययन।

निष्कर्ष :–

वे विद्यार्थी जिनकी कक्षागत समायोजन (क्षमता) उच्च थी उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उच्च स्तर की है।

8. कुमारी अनिता उपाध्याय (2003) :–

नवोदय विद्यालय एवं सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों एवं समायोजन का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष :– नवोदय विद्यालय एवं सामान्य विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदतें औसत स्तर की है।

उद्देश्य :– प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया :–

1. राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध एवं नवाचारी शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध एवं नवाचारी शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।
3. निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध एवं नवाचारी शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं तथा निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध एवं नवाचारी शिक्षण के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :– प्रस्तुत शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित है :–

1. राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सकारात्मक (धनात्मक) सहसंबंध है तथा नवाचारी–शिक्षण एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।
2. राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सकारात्मक (धनात्मक) सहसंबंध है तथा नवाचारी शिक्षण एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।
3. निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सकरात्मक (धनात्मक) सहसंबंध है तथा नवाचारी शिक्षण एक महत्वपूर्ण निर्धारक है।
4. राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं तथा निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध में महत्वपूर्ण व सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का परिसीमन :– प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध समस्या को शोधकर्ता द्वारा निम्न अध्ययन क्षेत्रों एवं आयामों तक परिसीमित किया गया है।

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले के क्षेत्र तक परिसीमित है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले में उच्च प्राथमिक स्तर पर कक्षा 8वीं में अध्ययनरत छात्र व छात्राओं तक परिसीमित है।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के भाषायी कौशलों के विकास, भाषा सृजनशीता व शैक्षिक उपलब्धि पर नवाचारी शिक्षण के प्रभाव के तुलनात्मक अध्ययन तक परिसीमित है।

4. प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए न्यादर्श के रूप में महेन्द्रगढ़ जिले में स्थित 10 राजकीय व 10 निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत 500 विद्यार्थियों को स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। इनमें 250 छात्र व 250 छात्राएँ थी।

शोध विधि :– शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत अनुसंधान कार्य के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसंख्या एवं न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में हरियाणा के महेन्द्रगढ़ जिले में स्थित 123 राजकीय व 72 निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर कक्षा 8वीं में अध्ययनरत सभी छात्र एवं छात्राएँ प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए जनंसख्या या समग्र है। शोधकर्ता ने 20 माध्यमिक विद्यालयों (10 राजकीय माध्यमिक विद्यालयों, 10 निजी माध्यमिक विद्यालयों) से यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा 500 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया। जिसमें 250 छात्र व 250 छात्राएँ थी।

चर :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित चर हैं :–

आश्रित चर :– शैक्षिक उपलब्धि।

स्वतंत्र चर :– नवाचारी शिक्षण।

उपकरण :– शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने के लिए अनुसंधानकर्ता द्वारा कक्षा 7वीं के वार्षिक परीक्षा के प्राप्तांको को आधार बनाया गया है।

आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण :– प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर किया है। जो इस प्रकार है :–

सारणी – 1

चर (समूह) (Group)	न्यादर्श (N)	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर (SL)
राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र	250	–0.609	* SL0.01 पर सार्थक नहीं है।
राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों की छात्राएँ	250		* SL0.05 पर सार्थक नहीं है।

*स्वतंत्रता अंश (df)498 के लिए 0.01 का मान = 0.114

*स्वतंत्रता अंश (df)498 के लिए 0.05 का मान = 0.087

परिणाम :– गणना द्वारा प्राप्त r का मान – 0.609 है जो दोनों सार्थकता स्तरों 0.01 व 0.05 पर सारणी मूल्यों से कम है।जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सहसंबंध है। अतः परिकल्पना 1 अस्वीकृत की गई।

सारणी – 2

चर (समूह) (Group)	न्यादर्श (N)	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर (SL)
राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र	125	–0.289	* SL0.01 पर सार्थक नहीं है।
राजकीय माध्यमिक विद्यालयों की छात्राएँ	125		* SL0.05 पर सार्थक नहीं है।

*स्वतंत्रता अंश (df)248 के लिए 0.01 का मान = 0.161

*स्वतंत्रता अंश (df)248 के लिए 0.05 का मान = 0.123

परिणाम :– गणना द्वारा प्राप्त r का मान – 0.289 है जो दोनों सार्थकता स्तरों 0.01 व 0.05 पर सारणी मूल्यों से कम है।जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सहसंबंध है। अतः परिकल्पना 2 अस्वीकृत की गई।

सारणी – 3

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/3.2.2022.433-437

चर (समूह) (Group)	न्यादर्श (N)	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर (SL)
निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र	125	+0.485	* SL0.01 पर सार्थक * SL0.05 पर सार्थक
निजी माध्यमिक विद्यालयों की छात्राएँ	125		

*स्वतंत्रता अंश (df)248 के लिए 0.01 का मान = 0.161
*स्वतंत्रता अंश (df)248 के लिए 0.05 का मान = 0.123

परिणाम :— गणना द्वारा प्राप्त r का मान + 0.485 है जो दोनों सार्थकता स्तरों 0.01 व 0.05 पर सारणी मूल्यों से कम है। जिससे स्पष्ट होता है कि निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सहसंबंध है। अतः परिकल्पना 3 स्वीकृत की जाती है।

सारणी — 4

चर (समूह) (Group)	न्यादर्श (N)	सहसंबंध गुणांक (r)	सार्थकता स्तर (SL)
राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राएँ	250	+0.163	* SL0.01 पर सार्थक * SL0.05 पर सार्थक
निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राएँ	250		

*स्वतंत्रता अंश (df)498 के लिए 0.01 का मान = 0.114
*स्वतंत्रता अंश (df)498 के लिए 0.05 का मान = 0.087

परिणाम :— गणना द्वारा प्राप्त r का मान + 0.163 है जो दोनों सार्थकता स्तरों 0.01 व 0.05 पर दिए गये सारणी मूल्यों से अधिक है।जिससे स्पष्ट होता है कि राजकीय माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओं तथा निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्र व छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण व सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना 4 अस्वीकृत की गई।

निश्कर्ष :— प्रस्तुत शोध अध्ययन के संदर्भ में अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्न निष्कर्ष निकाले गए :—

1. राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सहसंबंध है।
2. राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में ऋणात्मक सहसंबंध है।
3. निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण सकारात्मक धनात्मक सहसंबंध है।
4. राजकीय माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं तथा निजी माध्यमिक विद्यालयों में उच्च प्राथमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध में धनात्मक व महत्वपूर्ण सार्थक अन्तर है।

संदर्भ सूची :—

1. Best J.W. (1953) Elements of Educational Research, Englewood clifts, New York : Prentice Hall Ins.
2. Karlinger F.N. (1960) Foundation of Behavioural Research, Delhi, Subject Publication.
3. Pandly K.P. (2005) Fundamental Educational Research.
4. बी.एस. राजसपा (2010) : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व
5. डॉ. विपिन अस्थाना (2010—2011) : शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी
6. आर.ए.शर्मा (2011) : शिक्षा में अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर लाल बुक डिपो
7. सिंह रामपाल (2013) : शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन
8. शशीकला सरीन एवं सरीन : शैक्षिक अनुसंधान की विधियाँ, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9. लोकेश कौल—शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली
10. गुप्ता एस. पी. गुप्ता अल्का : सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबाद शाखा पुस्तक भवन।

<u>शोध पत्र एवं शोध अध्ययन :–</u>

1. हरिराम (2010) :–

❖ नेत्रहीन व सामान्य बालाकों का समायोजन व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।

2. प्रजापति सुनीता (2010) :–

❖ माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

3. दुबे भावेश चन्द (2011) :–

❖ विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव।

4. बाबूलाल (2011) :–

❖ बालक अभिभावक संबंधों का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

5. कुमार दुर्गेश (2011) :–

❖ बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों द्वारा शिक्षण अभ्यास के दौरान अपनाए जाने वाले शिक्षण कौशलों का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

<u>JOURANLS AND MAGZINES</u>

- Journal of Education, Abstract 2008
- National Council Research Education New Delhi, 2009
- Journal of Vocational Education, 2007
- Journal of Educational Technology, 2010
- Journal of Educational Psychology & Researh, July 2011

Websites :-

http://applij – oxford Journals.org.
http://www ccsenet .org/journal
http : // www-tandf-co-uk/journals
www,education.nic
www,researchgate.net
www,educationjournal.org.
www,educationinindia.net.